आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 6/अंक 1/मार्च 2026

Received: 15/03/2026; Revised: 18/03/2026; Accepted: 24/03/2026; Published: 28/03/2026

धूमिल की कविता में निहित समकालीन बोध एवं जनतंत्र की विडंबना

Dr. Deepa Kumari

Assistant Professor & HOD

Department of Hindi

D.B College Thalayolaparambu

Kerala- 686605

Dr. Deepa Kumari, **धूमिल की कविता में निहित समकालीन बोध एवं जनतंत्र की विडंबना,** आखर हिंदी पत्रिका, **खंड 6/अंक 1/मार्च 2026**, (75 -82)

https://doi.org/10.5281/zenodo.19499610

This work is licensed under CC BY-NC 4.0

शोध-सार:- समकालीन कविता का स्वर प्रतिवाद एवं प्रतिरोध का है। समकालीन हिंदी कविता सामाजिक राजनीतिक संघर्षों को दर्शाने वाली कविता है। सुदामा पांडे 'धूमिल' समकालीन (साठोत्तरी) कविता के जाने-माने हस्ताक्षर हैं। उनकी रचनाएँ आम आदमी के संघर्ष, मोहभंग के विरूद्ध उठी हुई स्पष्ट व सशक्त स्वर हैं। वे प्रखर विद्रोही एवं जनकवि के रूप में प्रसिद्ध हैं तथा प्रतीकात्मक सपाटबयानी शैली में अपनी बात रखते हैं। वे तत्कालीन व्यवस्था के विसंगतियों को निर्भीकता से उजागर करते है। 'संसद से सड़क तक', 'कल सुनना मुझे', 'सुदामा पांडे का प्रजातंत्र' काव्य संग्रह में समकालीन राजनीतिक व्यवस्था का सुन्दर व यथार्थ वर्णन मिलता है। आम जनता के प्रति उनकी कविताओं में संवेदनशीलता दृष्टिगोचर होती है। 'मोचीराम', 'पटकथा', 'प्रौढ़ शिक्षा', 'रोटी और संसद', 'घर में वापसी', 'अकाल दर्शन' आदि कविताओं में तत्कालीन व्यवस्था में मौजूद विद्रूपताओं को उजागर करने का प्रयास करते हैं। सामाजिक अन्याय के खिलाप उठ खड़े होने से तनिक भी पीछे हटते नहीं है। उनकी भाषा लोक-जीवन से जुड़ी भाषा है। वे प्रतीकात्मक सपाटबयानी शैली में शोषित वर्ग के मोहभंग, संघर्ष तथा हताशा को प्रस्तुत करने में बड़े माहिर हैं। कवि बेहतर प्रजातंत्र की कल्पना करता है। इसलिए वर्तमान व्यवस्था के विसंगतियों के प्रति अत्यंत तीखी भाषा में व्यंग्य कसते हैं।

बीज शब्द :- जनवादी चेतना, भूमंडलीकरण, बाजारवाद, उपनिवेशवाद, उत्तर आधुनिकता, लोकपक्ष, जनपक्ष।

'लोक' शब्द जनता से जुड़ा हुआ है एवं यह जनता के करीब होने के कारण जनता के जीवन, रहन-सहन तथा संस्कृति से अत्यधिक संबंधित है। समकालीन कविता वैविध्यमय जीवन के प्रति आत्मचेतस व्यक्ति की भाषागत संवेदनात्मक प्रतिक्रिया होने के कारण ही समकालीन कविता वर्तमान काल का बोध कराता है। अर्थात वर्तमान काल में जो हो रहा है का खुलासा। "समकालीन कविता आधुनिक मनुष्य को केंद्र में लेकर चलती है।"1 लोक जीवन से लगाव भी समकालीन कविता की एक प्रमुख विशेषता है जिसे आलोचकों ने लोक संसक्ति कहा है। "भूमंडलीकरण, बाजारवाद, उपनिवेशवाद, उत्तर आधुनिकता आदि की चकाचौंध में अपनी अस्मिता तलाशने वाली सामान्य जनता का आत्मसंघर्ष यहाँ देख सकते है। इसमें मानवीय चिंता प्रमुख है, लेकिन पैर तले की जमीन फिसल जाने से मानवीय अस्तित्व स्वयं संकट में पड़ जाता है।"2 समकालीन कविता में जनवादी चेतना के आयाम काफी विस्तृत है एवं धूमिल अपने स्पष्टवादी स्वभाव के कारण वर्तमान सामाजिक ज्वलंत समस्याओं के प्रति अत्यंत सजग होने से वे इसमें एक समकालीन संक्रमण बिंदु है।

समकालीन कविता में हिंदी के एकमात्र किसान कवि सुदामा पांडे 'धूमिल' का लोकपक्ष या जनपक्ष स्वर काफी चर्चित एवं महत्वपूर्ण हैं। वे मानवतावाद के पोषक, जनता एवं जनतंत्र के कवि है। प्रजा एवं तंत्र कविता पर लिखने में समर्थ हैं। चूँकि धूमिल युगबोध के कवि है इसलिए लोक चेतना या जनचेतना धूमिल में बारीकी से दृष्टिगोचर होता है। उनकी कविता आम आदमी के संघर्ष, संवेदना, असहायता और व्यवस्था विरोधी चेतना की सशक्त अभिव्यक्ति है। 'संसद से सड़क तक' एवं 'सुदामा पांडे का प्रजातंत्र' इसके सर्वोत्तम उदाहरण है। उनकी कविता जनता एवं जनतंत्र की सशक्त आवाज़ है। 'संसद से सड़क तक' में शायद ही ऐसा कोई पक्ष हो जिसे धूमिल ने नजर अंदाज किया हो। 'संसद से सड़क तक' कविता में सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, वर्ग एवं नारी चेतना के साथ-साथ अन्य अनेक ज्वलन्त विषयों का भी जिक्र हुआ है। इस कविता की सामाजिक-राजनीतिक शब्दावली यह दर्शाती है कि वे सच्चे अर्थों में जनचेतना के सशक्त कवि है। उनकी भाषा की सपाटबयानी उनकी कविताओं की प्रेरक शक्ति के रूप में उभरती हैं।

"न कोई प्रजा है
न कोई तंत्र है
यह आदमी के खिलाफ
आदमी का खुलासा
षड्यंत्र है।"3 (सुदामा पांडे का प्रजातंत्र)

तथाकथित प्रजातंत्र के प्रति कवि की गहरी वितृष्णा दिखाई पडती है। "इतनी साफ तरीके से कवि अपनी बात रखी है कि कहीं से इस वक्तव्य को नकारा नहीं जा सकता।"4 धूमिल की कविता में आम आदमी की तलाश एवं लोक चेतना बरकरार है। " दूसरों की ठण्ड को दूर करने के लिए अपनी पीठ पर ऊन ढोनेवाले

भेड़ की तरह जीने वाले सर्वहारे को धूमिल पहचानते हैं। इसलिए वे फटे हुए जूते के बीच कहीं एक अददत आदमी को ढूँढते हैं।"5 इस तरह धूमिल की कविताओं में तत्कालीन व्यवस्था पर कटाक्ष करने के साथ-साथ समकालीन वास्तविकताओं का भी पर्दाफाश हुआ है।

धूमिल समकालीन नवचेतना के कवि है। उन्होंने एक ओर तो वर्ग-संघर्ष से संत्रस्त मानवों के प्रति गहन संवेदना व्यक्त करते हुए इसके लिए उत्तरदायी व्यवस्था के विरुद्ध तीव्र आक्रोश व्यक्त किया है एवं दूसरी ओर बहुसंख्यक जनता को अभावों, कष्टों एवं पीड़ाओं में लीन देखकर शासको के अनुचित कार्यों के प्रति व्यंग्य वाणों की वर्षा भी की हैं। "वर्तमान जनतांत्रिक व्यवस्था में किसी अदृश्य तीसरा आदमी आ गया है। जिसने काम का खेल शुरू कर दिया है जो आम आदमी के पेट पर मरता है।"6 तत्कालीन सामाजिक एवं राजनीतिक व्यवस्था विचित्र बन चुकी है। इसलिए वे व्यवस्था, व्यवस्था में जीने वाले तथा उस व्यवस्था पर पलने वाले शोषकों तीनों को अपनी कविता में समेटना चाहते हैं ताकि व्यवस्था की अमानवीय परिस्थिति की वास्तविकताओं को प्रकाश में ला सकें।

"एक आदमी रोटी बेलता है
एक आदमी रोटी खाता है
एक तीसरा आदमी भी है
जो न रोटी बेलता है
न रोटी खाता है
वह सिर्फ रोटी से खेलता है
मैं पूछता हूँ यह तीसरा आदमी कौन है
मेरे देश की संसद कौन है।"

इस संदर्भ में धूमिल के 'मोचीराम' शीर्षक कविता का जिक्र किए बिना धूमिल प्रकरण अधूरा ही रह जाएगा। उनकी सर्वोच्च कविता'मोचीराम' में जनचेतना एवं समानता का स्वर दृष्टिगोचर होता है। "कदाचित यह उनकी सर्वोत्तम कविता- निहायत संयमित और निहायत प्रभावशाली- जटिल व्यापारों और बिंबो से गुथी हुई।"7 सर्वहारा वर्ग का मोची इस कविता का प्रमुख पात्र है इसके जरिए वह समाज में व्याप्त विद्रूपताओं की ओर तीखा व्यंग कसते है। "रोजमर्रा तरह-तरह के व्यक्तियों से मोची का सामना होता है और वह उनको पहचानने लगता है।"8 यह कविता मानवीय संवेदनाओं एवं सरोकारों से भरपूर हैं। ऐसा लगता है मानो सभी दोहरा चरित्र जीते हैं। इस कविता में मोचीराम के बड़प्पन को एवं उसकी जीवन को आँकने वाली सूक्ष्म दृष्टि को अंकित करते हुए कहते है।

"बाबूजी सच कहूँ- मेरी निगाह में
न कोई छोटा है
न कोई बडा है
मेरे लिए, हर आदमी एक जोड़ी जूता है

जो मेरे सामने

मरम्मत के लिए खड़ा है"9(मोचीराम)

असल में यह कविता बातचीत की शैली में बौखलाए हुए इंसान का एकालाप न होकर पेशे से जुड़े हुए इंसान का एकालाप है। "मोचीराम के औजारों के पास शब्द है, वे बोलते हैं, वे कहीं न कहीं आदमी बनने की तमीज भी सिखाते हैं।"10 इस कविता में आक्रोश एवं विद्रोह की प्रवृत्ति स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। इसमें मुख्य रूप से भ्रष्ट शासन व्यवस्था, सामाजिक-राजनीतिक विसंगतियों के प्रति तीव्र विरोध मुखरित हुआ है। धूमिल आम आदमियों के पास केवल दया एवं करुणा लेकर उपस्थित ही नहीं होते बल्कि उनके संघर्ष का साक्षी बनते हुए उनकी विचार दृष्टि एवं बुनियादी लोगों के प्रति उनकी भावात्मक क्रिया-प्रतिक्रिया को भी अंकित करने से नहीं चुकते।

इस कविता में वे अलग-अलग आदमियों की नियति एवं प्रकृति का खुलासा प्रस्तुत करता है जो वर्तमान समाज की भाग-दौड और अहंकार को व्यक्त करता है। "मोचीराम अपनी जिजीविषा और संघर्ष चेतना और आदमियत का बयान करता है। धूमिल इस कविता के माध्यम से हर स्थिति और परिस्थिति में एक अदद आदमी का शख्सियत और स्वाभिमान को तलाशने की चेष्टा करते है।"11 कवि कह उठता है:-

"और बाबूजी असल बात तो यह है कि जिंदा
रहने के पीछे
अगर सही तर्क नहीं है
तो रामनामी बेचकर या रण्डियों की
दलाली करके रोजी कमाने में
कोई फर्क नहीं है।"12

धूमिल राजनीतिक एवं सामाजिक यथार्थ को उसमें अंतनिहित विसंगतियों सहित प्रस्तुत करने का साहस भी करते हैं जिससे उनकी कविता सामाजिक एवं राजनीतिक यथार्थ का जीवंत दस्तावेज़ बन गई है। वे लोक में व्याप्त निर्मम वास्तविकताओं से आंखें नहीं चुराते वरन् अत्यंत जीवन्तता के साथ समाज में व्याप्त विसंगतियों को अपनी कविताओं में अभिव्यक्ति देते हैं। वे अत्यंत सजग होकर जन-जन को जाग्रत करने की चेष्टा करता है। "जनवाद अगर समाजवाद में परिणत नहीं होता तो इसका दुष्परिणाम जनतंत्र को भोगना पडता है। विद्रोह की जन्मदाता असमानता है। दो तरह की प्रजा कैसे यहाँ जी सकती है।"13 'पटकथा' शीर्षक कविता में कवि इसे सिद्ध करते हुए कहता है कि

एक ही संविधान के नीचे
भूख से रियाती हुई फैली हथेली का नाम
दया है
और भूख में
तनी हुई मुट्ठी का नाम
नक्सलबाड़ी है। (पटकथा से)

'मतदाता' शीर्षक कविता में जीवित रहने के श्रम में ही जनता अपना जीवन गँवा रही है।

"मत-पत्र के साथ वह अपनी समझ नहीं डाल आया
है आज भी-
अगली लड़ाई के लिए उसके दांत और नाखून
एक रोटी पर सुरक्षित है।"14

'पतझड़' शीर्षक कविता में धूमिल जनवाद एवं जनसंघ को एक सूत्र में बँधने की चेष्ठा करता है।

"जनवादी मुद्रा में
शाखों पर चढ़ नकचढ़ी हवा
शब्द वृद्द पत्तों पर
समकालीन के जनसंघी नुस्खे लिखती है।"15

अधिकांश भारतीय जनता अपनी विवशताओं में जीने के लिए अभिशप्त है एवं भूख से बेहाल भी हैं पर कुछ लोग ऐसे भी हैं जो प्रजातंत्र से मालामाल हो रहे हैं। धूमिल इसका राज समझते है और स्थिति एवं व्यवस्था में होने वाले विभिन्न परिणाम की ओर संकेत करते है। "राजनीतिक एवं सामाजिक यथार्थ को उसमें अंतनिहित विसंगतियों के साथ समग्रता से धूमिल चित्रित किया"16 'पटकथा' में उन्होंने भारत की दुर्दशा का इतना खुला एवं मार्मिक चित्रण प्रस्तुत किया है जो वाकई अनन्य है। "धूमिल आम जनता के पक्षधर थे। सबसे निरीह, शोषित, पीड़ित एवं सताए हुए आदमी की आवाज के रूप में उन्होंने कविता को तब्दील किया था।"17 जनता, चुनाव, नेता, संसद, न्याय व्यवस्था और संविधान प्रजातांत्रिक व्यवस्था के मुख्य तत्व है। कवि धूमिल अपनी कविताओं में प्रजातंत्र के यथार्थ स्वरूप एवं उसमें निहित विरोधाभासों को समाज के सम्मुख रखने की चेष्टा करते है। तत्कालीन जनतांत्रिक व्यवस्था में मध्यवर्ग शारीरिक व मानसिक उत्पीड़न झेलने को मजबूर है तथा यह उत्पीड़न प्रत्यक्ष रूप से शारीरिक अंग-प्रत्यंग में झलकने भी लगता है। उन्हें तत्कालीन शासन प्रणाली में कमी नजर आती है।

"मैं उन्हें समझता हूँ
वह कौन-सा प्रजातांत्रिक नुस्खा है
कि जिस उम्र में
मेरी माँ का चेहरा
झुर्रियों की झोली बन गया है
उसी उम्र की मेरे पड़ोस की महिला
के चेहरे पर
मेरी प्रेमिका के चेहरे-सा
लोच है।"18

हमें लोहे के स्वाद का परिचय धूमिल ने ही कराया क्योंकि आम या साधारण जनता हमेशा शोषण के अधीन रहने के लिए विवश है एवं आम जनता शोषण सहने के आदी भी है। वर्तमान सामाजिक-राजनीतिक

परिस्थितियों के लिए शासकों की स्वार्थी प्रवृत्ति एवं जनता कि निष्क्रियता दोनों उत्तरदायी हैं। जनता अत्याचार सहते हुए भी प्रतिरोध नहीं करते तथा राजनेता अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए राष्ट्रीय हितों की उपेक्षा करते हैं।

"लोहे का स्वाद
लोहार से मत पूछो
उसे घोडे से पूछो
जिसके मुंह में लगाम है।"19

धूमिल राजनीतिक विसंगतियों को दर्शाने के साथ ही राजनेताओं पर भी तीक्ष्ण व्यंग कसते हैं। धूमिल अवसरवादी राजनेता का जिक्र अपनी कविताओं में करते हैं जो चुनाव के वक्त जनता से झूठे वादे करते हैं। कुर्सी प्राप्त होने के उपरांत जनता की समस्याओं पर अमल भी करना पसंद नहीं करते हैं। राजनेताओं की कपटी एवं खोखली नारेबाजी से तत्कालीन समाज में व्यंग्यात्मक दृष्टि पनपती है, जिसका यथार्थ सुंदर चित्रण कवि अपनी कविताओं में करता है। इसी प्रकार पूँजीवादी एवं उपभोक्तावादी संस्कृति का प्रतिरोध उनकी दूरदर्शिता को भी प्रभावित करता है जो 'नौ मादा कविताएँ' शीर्षक की आठवीं कविता 'स्त्री' में अभिव्यक्त है।

"मुझे पता है/ स्त्री-
देह के अंधेरे में/ बिस्तर की/ अराजकता है।
स्त्री पूंजी है/ बीड़ी से लेकर
बिस्तर तक/ विज्ञापन में फैली हुई।"(स्त्री - कविता)

धूमिल की 'प्रौढ़ शिक्षा' नामक कविता सामाजिक महत्व के विषय से संबंधित होने के कारण व्यक्ति के विकास एवं समाज की उन्नति के लिए आम आदमी के सुशिक्षित होने की अनिवार्यता पर बल देने वाली कविता है। इस कविता में जनशक्ति के महत्ता को प्रतिपादित करते हुए कवि कहता है कि किसान जो अन्नदाता है जिसे सच्चा पृथ्वीपुत्र माना जाता है, ये सब ऊँची-ऊँची संज्ञाएँ उसे ठगने के लिए ही बनाई गई है। "सचमुच यह कविता श्रमिक वर्ग के आत्मज्ञान की क्रांति की कविता हैं। अपने अधिकारों से श्रमिक को वंचित करने वाली और उसे दूसरों के शोषण का शिकार बनाने वाली अभिशप्त निरक्षरता की काली रात को समाप्त करके ज्ञान लोक वरण का आह्वान इस कविता में दिया जाता है।"20 कवि कहता है कि शोषित वर्ग जो स्वयं नंगा रहकर दुनिया को ढकना चाहता है एवं जो अपना हस्ताक्षर करने की भी योग्यता न रखता हो। यह बात आजाद देश के लिए कितना शर्मनाक है। व्यवस्था की वास्तविकता की प्रस्तुति ही धूमिल की काव्य चेतना का या जनचेतना सबसे अहम पक्ष है। वे प्रजातान्त्रिक व्यवस्था एवं शासकों की चारित्रिक पतन को अपनी कविताओं में उजागर करने से नहीं थकते। उन्हें लगता है कि सभी तत्कालीन भ्रष्ट व्यवस्था से चिपके हुए हैं, सत्य को उजागर करने का धैर्य किसी में भी नहीं रही।

"कल मैंने कहा था कि वह दुनिया
जिसे ढकने के लिए नंगे हो रहे थे
उसी दिन उधर गई थी

जिस दिन हर भाषा
तुम्हारे अंगूठा-निशान की स्याही में डूबकर
मर गई थी।"21

कवि चाहता है कि सर्वहारा वर्ग अपने अधिकारों से भली भाँति परिचित हो वरना उन्हें पूंजीपतियों पर आश्रित होना पड़ेगा। अपने अस्तित्व को बनाए रखने के उपदेश देते है। कवि अपनी कविताओं में हाशिए में पड़े सर्वहारा वर्ग के संघर्ष, जीवन और व्यथा को अत्यंत प्रभावशाली ढ़ंग से प्रस्तुत करके स्वार्थ एवं छल में डूबी तत्कालीन राजनीतिक सामाजिक एवं आर्थिक व्यवस्था पर तीखा व्यंग कसते हैं। कवि आम आदमी की पीड़ा एवं राजनीतिक व्यवस्था के विरोध को व्यक्त करते हुए कहता है।

"इसलिए मैं फिर कहता हूँ कि हर हाथ में
गिली मिट्टी की तरह हाँ-हाँ मत करो
तनो
अकड़ो
अमरेबेली की तरह मत जियो
जड पकड़ो।"22

कवि आगे कविता में कहता है कि सिर्फ दूसरों को खिलाना काफी नहीं है बल्कि काम करने के साथ-साथ अपने अधिकारों को पहचान लेना भी अत्यंत आवश्यक है जो शोषण से मुक्त होकर रहने के लिए भी जरूरी है। इसी प्रकार "मकान शीर्षक कविता में धूमिल ने टूटते' हुए स्वप्नों, गरीबी, घुटन का जीवंत चित्रण किया है।"23 अतः हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि धूमिल अपनी कविताओं के माध्यम से प्रकाशपूर्ण भविष्य का द्वार को खोलने की प्रेरणा तत्कालीन समाज को देता है विशेषकर समाज के पीड़ित, शोषित एवं श्रमिक वर्ग को। "धूमिल के कविता के प्रत्येक पंक्ति में, प्रत्येक शब्द में उनके व्यक्तित्व की स्पष्ट झलक दिखाई देती है। उनकी कविताओं में उनके व्यक्तित्व के अनुरूप ही संघर्ष, आक्रोश, खीझ, क्रांति आदि की अभिव्यक्ति शब्द-शब्द में होती है।"24 इस प्रकार कवि स्वयं को आम आदमी से जोड़े रखता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. विश्वनाथ उपाध्याय: समकालीन कविता की भूमिका: मैकमिलन कंपनी आफ इंडिया लिमिटेड, नई दिल्ली: पृ. सं. 3
2. डॉ प्रमोद कोवप्रत: समकालीन हिंदी कविता का तापमान: जवाहर पुस्तकालय: पृ. सं.18
3. एम.एस.जयमोहन:हिंदी कविता प्रयोग से समकालीन तक: पृ. सं.140-141
4. एम.एस.जयमोहन:हिंदी कविता प्रयोग से समकालीन तक: पृ. सं.227
5. डॉ प्रमोद कोवप्रत: समकालीन हिंदी कविता का तापमान: जवाहर पुस्तकालय: पृ.सं.18
6. डॉ प्रमोद कोवप्रत: समकालीन हिंदी कविता का तापमान: जवाहर पुस्तकालय: पृ.सं.18

7. डॉ बच्चन सिंह: हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास:अंकुर प्रकाशन: पृ.सं.452
8. एम.एस.जयमोहन:हिंदी कविता प्रयोग से समकालीन तक: पृ. सं.226
9. एम.एस.जयमोहन:हिंदी कविता प्रयोग से समकालीन तक: पृ. सं.134
10. डॉ बच्चन सिंह: हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास: अंकुर प्रकाशन: पृ.सं.452
11. रामकिशोर शर्मा: आधुनिक कवि 'विश्वंभर मानव': लोकभारती प्रकाशन: पृ.सं.292
12. एम.एस.जयमोहन:हिंदी कविता प्रयोग से समकालीन तक: पृ. सं.137
13. डॉ प्रमोद कोवप्रत: समकालीन हिंदी कविता का तापमान: जवाहर पुस्तकालय: पृ. सं.18
14. एम.एस. जयमोहन: हिंदी कविता प्रयोग से समकालीन तक: पृ. सं.142
15. डॉ बच्चन सिंह: हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास: अंकुर प्रकाशन: पृ.सं.452
16. डॉ निरंजन: काव्य-तरंग: पृ.सं.68
17. डॉ निरंजन: काव्य-तरंग: पृ.सं.68
18. रामकिशोर शर्मा: आधुनिक कवि 'विश्वंभर मानव': लोकभारती प्रकाशन: पृ.सं.289-290
19. एम.एस. जयमोहन :हिंदी कविता प्रयोग से समकालीन तक: पृ. सं.140-141
20. O.V Usha: पराग: महात्मागाँधी विश्वविद्यालय: पृ. सं. 75
21. O.V Usha: पराग: महात्मागाँधी विश्वविद्यालय: पृ. सं. 77
22. संसद से सड़क तक: धूमिल: राजकमल प्रकाशन: नई दिल्ली: पृ. सं. 34
23. रामकिशोर शर्मा: आधुनिक कवि 'विश्वंभर मानव': लोकभारती प्रकाशन: पृ.सं.29
24. डॉ गीता अस्थाना: धूमिल की काव्य चेतना: विद्या प्रकाशन: पृ.सं.65

****